धूमिल की कविता में युगबोध

*डॉ. सत्य नारायण शर्मा

Abstract

साठोत्तरी कवियों में धूमिल का स्थान अग्रगण्य है इनकी कविताएँ काफी चर्चित रही है। यदि हम यह कहें कि निराला और मुक्तिबोध के पश्चात् जिस कवि ने समाज की विकृतियों को सबसे अधिक उघाड़ कर रख दिया तो वह धूमिल ही है। अपने जीवन के अल्पकाल में ही धूमिल ने जीवन की कड़वाहट का अनुभव किया था इसी कारण उन्होंने जितना भी लिखा, अपने युग का आईना है। धूमिल का वास्तविक नाम सुदामा प्रसाद पाण्डेय था। अपने उन्तालीस वर्ष के जीवन में इन्होंने जितना भी लिखा है उसमें उनका सामाजिक सरोकार झलकता है। इनके दो काव्य–संग्रह ही प्रकाशित है। 'संसद से सड़क तक' इनका पहला काव्य–संग्रह हैं, इसका प्रकाशन काल सनृ 1972 है। इसमें कुल पच्चीस कविताएँ हैं जिनमें पट कथा, मोचीराम, कवि 1960, तथा 'भाषा की रात' जैसी प्रसिद्ध कविताएँ है। इस संग्रह में 'संसद से सड़क तक' शीर्षक से कोई कविता नहीं है और न ही धूमिल ने इस शीर्षक से कोई कविता लिखी है। पर इस संग्रह की सारी कविताएँ इसी शीर्षक के इर्द–गिर्द घूमती है। वास्तव में इनकी कविताएँ संसद और सड़क को रूपायित करती है। संसद अर्थात् भारतीय राजनीति तथा सड़क अर्थात् भारत का आम आदमी। धूमिल के अनुसार कविता एक सार्थक वक्तव्य है।

'कल सुनना मुझे' धूमिल की कविताओं का दूसरा संग्रह है जिसे राजशेखर ने सम्पादित किया है और डॉ. विद्या निवास मिश्र ने प्रस्तावना लिखी है इसमें कुल सैतीस कविताएँ है। इस संकलन की कविता 'आज मै लड़ रहा' 'कल सुनना मुझे' एक वाक्य है। डॉ. विद्या निवास मिश्र ने संग्रह की प्रस्तावना लिखी है कि 'शब्दों को खोलकर रखने वाले' युवा कवि धूमिल का यह संग्रह 'कल' प्रकाशित हो रहा है। कन्हैया ने पहले इस संग्रह का नाम रखा था 'दस्तक' पर मैने ही सुझाव दिया कि दस्तक देने वाला रहता तो यह नाम ठीक था, अब तो इसकी पुकार की गूंज रह गयी है, नाम 'कल सुनना मुझें' रखो, यही ठीक रहेगा। इन दो संग्रहों के अतिरिक्त धूमिल की कुछ और कविताएँ है जो विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित है। जिनमें 'आवेग' की पाँच और 'आलोचना' की सात कविताएँ हैं। इन सात कविताओं में से छः कविताओं को थोड़े फेर बदल के 'कल सुनना मुझे' में रखा गया है। यद्यपि परिमाण में इनकी रचनाएँ कम है पर उनमें पूरा युग, तत्कालीन समाज, परिवेश झांकता है।

इस सदी की सर्वप्रमुख घटना है भारत का आजाद होना। भारत आजाद हो गया, लोगों ने कुछ स्वप्न देखे थे, आजाद भारत में वे प्रसन्नता के वातावरण में रहने की कल्पना कर रहे थे परन्तु नियति ने कुछ और ही खेल खेला। भारत का विभाजन एक ऐतिहासिक दुर्घटना हुई। पाकिस्तान ने आक्रमण किया। इन कुछ घटनाओं के परिणाम स्वरूप मार काट हुई, लोग बेघर हुए, हत्याएँ हुई, आगजनी हुईं और अनेकों समस्याएँ आजाद भारत को देखनी पड़ी। इसके परिणाम स्वरूप भारतीयों की कल्पनाएँ लड़खड़ाने लगी, मोह भंग की स्थिति आ गई। कवि ने भी उस समय से उत्पन्न भूख, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और प्रजातन्त्र की असफलता जैसी ज्वलन्त समस्याओं का चित्रण अपनी

कविताओं में किया।

बच्चे भूखे हैं:
माँ के चेहरे पत्थर,
पिता जैसे काठ : अपनी ही आग में
जले है ज्यों सारा घर[1]

आजाद भारत में लाखों शरणार्थी आये, जिससे भूखमरी की समस्या विकराल रूप धारण कर गई, कई लोग आधा पेट भोजन पाते और कुछ पानी पीकर ही रोटी के अभाव को पूरा करते थे।

खाने से पहले मुँह दुब्बर
पेट भर
पानी पीता है और लजाता है
कुल रोटी तीन
पहले उसे थाली खाती है
फिर वह रोटी खाता है।[2]

यद्यपि भारत सरकार ने पंचवर्षीय योजनाएँ आरम्भ की, अन्न–उत्पादन के लिए क्रांति लाई, औद्योगिक विकास की बातें सोची गई, वैज्ञानिक आविष्कारों का सहारा लिया गया। परिवर्तन भी होने लगा परन्तु भ्रष्टाचार के कारण भूखे तक अनाज नहीं पहुँच सका। इस ओर भी कवि ने संकेत किया है।

वहाँ बंजर मैदान
कंकालों की नुमाइश कर रहे थे
गोदाम अनाज से भरे पड़े थे और लोग
भूखों मर रहे थे।[3]

कवि ने उस समय व्याप्त भूख को महसूस किया। इस दृष्टि से इनकी मिट्टी की करूणा का छंद' शीर्षक कविता सार्थक है। इसमें वे बताते हैं कि बटलोही में दाल नहीं है और तवे पर रोटी नहीं है। ऐसी स्थिति के करछुल बटलोही से बातें करती है। और चिमटा खाली तवे से टकराता है। आग खमोश चल रही है और यही आग भूखे के पेट में भी विद्यमान है।

करछुल
बटलोही से बतियाती है और चिमटा
तवे से मचलता है
चूल्हा कुछ नहीं बोलता
चुपचाप जलता है और चलता रहता है।[4]

पेट की भूख सबसे बड़ी भूख होती है। आटा जब 'कठवत्' की भूख को ही पूरा नहीं करता तो परिवार के सदस्यों की भूख कैसे शान्त हो। यह 'कठवत्' का खालीपन जीवन का ही खालीपन है। घर की मालकिन विवश है। सोचती है छः रोटियों से छः सदस्यों का पेट कैसे भरेगा? यह स्वतन्त्र भारत के गरीब व्यक्ति की त्रासदी है कि भूख में पानी ही पीना पड़ता है। घर की औरत अपने हिसाब से समाधान करना चाहती है।

बड़कू को एक

छोटकू को आधा
परवती'–बालकिशुन आधे में आधा
कुल रोटी छै
और तभी मुँह दुब्बर
दरबे में आता है – 'खाना तैयार है?[5]

आजादी मिलने पर भी यहाँ का गरीब व्यक्ति और गरीब होता गया उसके खेत बिके, उसका घर बिका पर उसकी भूख नहीं मिटी। जीवन यापन करने के लिए जो कम से कम आवश्यकताएँ भी होती हैं वह भी इस गरीब व्यक्ति के पास नहीं है। इसकी तो भूख ही विकराल है, कई बार कई–कई दिन तक रोटी नसीब नहीं होती है–

मैं चुपचाप उठकर रसोई घर में जाता हूँ
और पूछता है 'क्या हो रहा है'
यह जानते हुए भी कि कई दिनों के बाद
भूख का जायका बदलने के लिए
आज कुम्हड़े की सब्जी पक रही है।[6]

यह त्रासदी घर की औरत के लिए और भी विकराल है। औरों को खिलाकर भारतीय नारी स्वयं भुखी भी रह सकती है। उसके तन पर फटी साड़ी है, चेहरा उदास है। पेट भूखा है।

पत्नी का उदास और पीला चेहरा
मुझे आदत सा आंकता हैं
उसकी फटी हुई साड़ी से झांकती हुई पीठ पर
खिड़की से बाहर खड़े पेड़ की
वह रात चमक रही है।[7]

इसमें 'आदत सा आंकता' सारी व्यथा को समेटने वाला वाक्यांश है। ऐसे लोगों के लिए स्वतन्त्रता या योजनाएँ क्या अर्थ दे सकती है। जब उनका पेट ही खाली हो तो क्या मानवीय मूल्य और क्या आस्था और विश्वास।

हर व्यक्ति के जीवन का अधिकांश समय रोटी के लिए कमाने में ही व्यतीत होता है। अपमान सहकर आँसू पीकर भी व्यक्ति मशीन की तरह काम करता है। बार–बार फटकार की परवाह न करते हुए अनगिनत लोग काम पर जाते हैं भूखे पेट अधभरे पेट, अपने बच्चों के आँसू और फटे हाल बीबियों के लिए कुछ कमाने के लिए। जीवन भर वे पूरी कमीज पहनने के लिए भी नहीं कमा सकते हैं केवल फटकार खाकर सह लेते हैं–

दुःख होता है अगर किसी की
मिली नौकरी छूट गईं हो
लेकिन उतना नहीं
कि जितना
बार–बार सुनने पर भी फटकार
आदमी लौट काम पर
फिर आया तो
कालर फटी कमीज पहन कर।[8]

कमाने की मशीन बनकर व्यक्ति का हृदय खोखला होता जा रहा है, उसकी भावना मर रही है, आपसी रिश्ते समाप्त

हो रहे हैं किसी के लिए कोई सहानुभूति भी नहीं है। व्यक्ति ने अपनी आत्मीयता ही खो दी है। इसका चित्रण कवि करते हैं–

अब ऐसा वक्त आ गया है जब कोई
किसी का झुलता हुआ चेहरा नहीं देखता है
अब न तो कोई किसी का खाली पेट
देखता है, न थरथराती हुई टांगे
सबने भाई चारा भुला दिया है।[9]

आदमी और आदमी के बीच यही भाई चारा उसकी आदमियत की पहचान है। धीरे–धीरे यह आदमियत की पहचान ही समाप्त हो रही है। फिर आदमी कहाँ आदमी है वह तो 'चीज' बनता जा रहा है। उसके मानवीय मूल्य समाप्त होते जा रहे हैं। उसकी आस्था समाप्त होती जा रही है। संघर्ष की टकराहट में व्यक्ति निराश होता जा रहा है। भ्रष्ट वातावरण से गुजर कर उसे कुछ उजला दिखाई ही नहीं दे रहा है। कवि इस ओर भी इंगित करता है।

क्योंकि वह समझता है
कि दिन की शुरूआत का ढंग
सिर्फ हारने के लिए होता है।[10]

धूमिल अपने समय के व्यक्ति की पीड़ा का चित्रांकन करते हैं। धूमिल मूलतः मानवीय मूल्यों के कवि हैं उनमें आस्था और आशा का भाव प्रबल है। अपने चारों ओर भ्रष्ट वातावरण देखकर उसे ठेस लगती है और वह अपनी कविताओं में इस पीड़ा और यातना को व्यक्त करता है।

आजादी हासिल करके लोगों को नेहरू युग से बड़ी आशाएँ थी परन्तु धीरे–धीरे वास्तविकता सामने आने लगी सन् 1962 में चीनी आक्रमण से जबरदस्त मोह भंग किया, युवा वर्ग में बेकारी के कारण आक्रोश और असंतोष बढ़ गया, नेताओं द्वारा चुनावों में किये गये आश्वासन खोखले साबित होने लगे। धूमिल ने भी इसका चित्रण किया है।

बीस साल बाद
मेरे चेहरे में
वे आँखें वापस लौट आई हैं
जिनसे मैंने पहली बार जंगल देखा है।[11]

वास्तव में जो आजादी हमें मिली थी उसके बादा ही यह साबित हो गया कि अंग्रेजों की जगह भारतीय पूँजी पतियों ने ली है अतः शोषण की प्रक्रिया चलती रही। व्यक्ति ने कई समस्याओं पर प्रश्नचिह्न लगा लिये। स्वतन्त्रता के समय कितना उत्साह और उल्लास था, शताब्दियों की गुलामी की जंजीरों से देश आजाद हो रहा था और हर भारतीय में उमंग और आशा थी।

बाहर हवा थी
धूप थी
घास थी
मैने कहा आजादी।
मुझे अच्छी तरह याद है
मैने यही कहा था
मेरी–नस–नस में बिजली

दौड़ रही थी
उत्साह में
खुद मेरा स्वर
मुझे अजनबी लग रहा था।[12]

परन्तु आजादी अपने साथ कई समस्याएँ भी लाई अतः आगे भी कोई सुनहरा भविष्य नहीं था। धूमिल इसे 'लंगड़ा भविष्य' कहते है। विश्व के सबसे बड़े जनतंत्र में सब कुछ व्यवस्थित नहीं था, युवा पीढ़ी कराह रही थी, नारों की दुनियां गर्म थी, आश्वासनों का प्रलोभन था और देश की आम जनता भ्रम में दिन व्यतीत करती थी।

अपने यहाँ संसद–
तेल की वह घानी है
जिसमें आधा तेल है
और आधा पानी है।[13]

यद्यपि यहाँ इतनी बार चुनाव हुआ लोगों ने सोचा कुछ बदलाव होगा, नये की आशा बंधती थी, पर कहीं कुछ नहीं बदलता था। आम जनता के लिए परिवर्तन कहीं नहीं था अंग्रेजी हैट हो या नेहरू टोपी, केवल टोपियाँ ही बदलती रही–

हाँ यह सही है कि कुर्सियाँ वही हैं
सिर्फ टोपियाँ बदल गयी हैं।[14]

धूमिल को तत्कालीन राजनीतिक तंत्र के प्रति आक्रोश है। धूमिल ने यूवा पीढ़ी के द्वारा उस समय की अव्यवस्था के प्रति तलख अनुभूति व्यक्त की है। इतना ही नहीं लोगों को न्याय भी नहीं मिलने लगा। न पंचायत में न्याय मिलता था और न कचहरी में। गरीबों की पहुँच से न्याय दूर की चीज था। धूमिल ने अपनी कविता में न्याय के अभाव की ओर इशारा किया है।

गाँव की सरहद
पार करके कुछ लोग
बगल में बस्ता दबाकर कचहरी
जाते है। और न्याय के नाम पर
पूरे परिवार की बरबादी उठा लाते है।[15]

धूमिल की कविता में यूवा–आक्रोश की अभिव्यक्ति हुई है। सरकारी तंत्र अपनी जिम्मेदारियों से मुँह मोड़ता गया, गरीबों को लूटना आरम्भ हुआ, धूमिल के अनुसार 'चरित्रहीनता मंत्रियों की कुर्सी में तब्दील हो चुकी है' की स्थिति थी। जनता अबोध भेंड़ की तरह दीखती है।

जनता क्या है ?
एक भेड़ है
जो दूसरों की ठंड के लिए
अपनी पीठ पर
ऊन की फसल ढो रही है
एक पेड़ है। जो ढलान पर

हर आती–जाती हवा की जुबान में
हाँ–हाँ करता है।[16]

धूमिल ने सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक जटिलताओं को अपनी कविता में खोल कर रख दिया है। उन्हें पीढ़ी की बेरोजगारी की समस्या विकट और विकराल दिखाई देती थी। यह पीढ़ी नौकरी की तलाश में सड़कों पर घूम रही है, एक दफ्तर से निकल दूसरे दफ्तर में नौकरी की तलाश में भटकते है। उनके आगे कोई मार्ग नहीं कोई लक्ष्य नहीं है।

मैने राष्ट्र के कर्णधारों को
सड़कों पर
किश्तायों की खोज में
भटकते हुए देखा है।[17]

धूमिल उस राजनीतिक भ्रष्ट वातावरण को निशाना बनाते हैं जिसमें हर चुनाव में नेता नये नारों से नये आश्वासन देते हैं, हाथ जोड़ते हैं पर वे अगले चुनाव तक कहीं नजर नहीं आते हैं। वे कहते है

हाँ, यह सही है कि इन दिनों
मंत्री जब प्रजा के सामने आता है
तो पहले से कुछ ज्यादा मुस्कराता है
नए–नए वादे करता है
और यह सिर्फ घास के सामने होने की मजबूरी है।[18]

यहाँ 'घास' वोट के लिए आया है। धूमिल ने ग्रामीणों की निष्क्रियता को भी अभिव्यक्ति दी है। वे कोई काम नहीं करते है इसलिए महाजन भी उन्हें लूटता है। हमारे नैतिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। ग्रामवासियों की निष्क्रियता उनकी प्रगति में अवरोधक है। कवि को वे आलसी और तटस्थ लगते है।

मेरे गाँव में
वही आलस्य, वही ऊब
वही कलह, वही तटस्थता
हर जगह और हर रोज.....[19]

धूमिल राजनीतिक भ्रष्टता का वर्णन भी करते हैं और सामाजिक कटुता भी दर्शाते हैं। इन्होंने 'संसद से सड़क तक' में व्यक्त किया है कि हिन्दुस्तान के नक्शे को 'गाय' विकृत करती है जिसे आम हिन्दुस्तानी 'माँ' मानता है।

हवा से फड़फड़ाते हुए हिन्दुस्तान के नक्शे पर
गाय ने गोबर कर दिया है।[20]

धूमिल ने नारी का भी वास्तविक चित्रण किया है। उनके काव्य में नारी विविध रूप पत्नी, प्रेमिका, माँ आदि सभी का चित्रण है। इनके काव्य में नारी माँ के रूप में बच्चे को लोरियाँ भी देती है, वह बच्चों को सुलाकर खेत पर काम करने भी जाती है। इन्होंने गृहस्थिन के रूप में भी नारी का चित्रण किया है। इस सन्दर्भ में 'कवि–1960' कविता उल्लेखनीय है। 'कुमारी रोशन आरा बेगम के लिए' शीर्षक कविता भी नारी वीरता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इन्होंने वेश्या जीवन की विसंगति का भी चित्रण किया है। 'संसद से सड़क तक' संग्रह में ऐसी कुछ कविताएँ भी है जिनके आधार पर धूमिल के नारी सम्बन्धी विचार काफी चर्चित रहे हैं। 'मकान' और 'उस औरत की बगल में लेटकर'

कविताएँ इस संदर्भ में ली जा सकती है। धूमिल नारी को 'देह' इसलिए मानते हैं क्योंकि यदि वह 'देह' न होती तो वह अपने आँचल में स्नेह को भी पालित नहीं करती। इस प्रकार के बयान में उनकी यथार्थवादी दृष्टि है।

औरत : आँचल है,
जैसा कि लोग कहते हैं–स्नेह है
किन्तु मुझे लगता है–
इन दोनों से बढ़कर
औरत एक देह है।[21]

धूमिल के इस कथन को सामंती दृष्टि का परिचायक भी बताया जाता है पर यह मानना ठीक नहीं है क्योंकि उन्होंने इसके साथ–साथ नारी मन की उन प्रेम और वाल्सल्य की अनुभूतियों की ओर भी इंगित किया है, जो अमूल्य है। प्रसिद्ध समालोचक डॉ. नामवर सिंह भी मानते है कि इनके मन में कहीं स्त्री विषयक रोमाटिंक दृष्टि के विरूद्व तीव्र प्रतिक्रिया का भाव था। उनके अनुसार यद्यपि वे स्त्री को देह के रूप में स्वीकार करते है लेकिन उल्लेखनीय है कि इसका सन्दर्भ गृहस्थी का है।[22] निम्न पंक्तियों में धूमिल ने नारी को माँ के रूप में चित्रित किया है।

वह कौन सा प्रजातांत्रिक नुस्खा है
कि जिस उम्र में
मेरी माँ का चेहरा
झुर्रियों की झोली बन गया है।[23]

धूमिल ने उस नारी का चित्रण किया है जो हमारे आस–पास की नारी है, हमारे गाँव या शहर की गरीब नारी है। वह 'किस्सा जनतंत्र में 'रोटियों के समीकरण बनाती है। जहाँ छः सदस्यों के परिवार के लिए कुल छः ही रोटियाँ है। यह विवश नारी कुछ नहीं देख सकती, कुल नहीं कह सकती है वह केवल परिस्थितियों की मूकदर्शक बनकर रह जाती है।

चौके में खोई हुईं औरत के हाथ
कुछ भी नहीं देखते
वे केवल रोटी देखते हैं और बोलते रहे हैं
एक छोटा सा जोड़ भाग
गश खाती हुई आग के साथ–साथ
च्लता है और चलता रहता।[24]

धूमिल भविष्य के प्रति आशावान है। यद्यपि उन्होंने अपने युग की कटुताओं का पर्दाफाश किया है परन्तु भविष्य के लिए वे उजाले की एक किरण देखते हैं। वे सुखद भविष्य की तलाश में है।

धरती पर एक हरी पत्ती
ओस कणों के लिए
अब भी रात बीतने का इंतजार
कर रही है।[25]

'भाषा की रात' में धूमिल भाषा–विवाद का प्रश्न भी उठाते है। कुछ लोग 'भूख' की जगह भाषा का प्रश्न उठाते हैं और उत्तर और दक्षिण के बीच भाषा–विवाद खड़ा करते है। 'कल सुनना मुझे' संग्रह की पहली कविता 'जवाहर

लाल नेहरू की मृत्यु पर है। इससे पूर्व 'संसद से सड़क तक' की 'पटकथा' तथा अन्य कविताओं में धूमिल ने नेहरू तथा नेहरू शासन की आलोचना प्रस्तुत की थी और कहा था कि उनके पास हर समस्या का हल 'कोट के बटन होल में महकता हुआ गुलाब था। परन्तु इधर तक आते–आते कवि के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है। अब कवि नेहरू को 'मोती की आभा' तथा 'विशाल बरगद' भी कह रहा है। धूमिल के अनुसार युवा लेखन के लिए राजनीतिक समझदारी आवश्यक है। बिना इस समझदारी के आज का लेखन सम्भव नहीं है। उन्हें राजनीतिक स्तर पर तत्कालीन जनतन्त्र में विश्वास नहीं था इसी कारण उन्हें 'दूसरे प्रजातन्त्र की तलाश' थी। अशोक वाजपेयी ठीक कहते हैं कि 'दूसरे प्रजातन्त्र की तलाश' का तीखा अहसास अगर धूमिल की कविता में है तो इसलिए कि वे राजनैतिक अर्थ में भी एक जागरूक और क्षुब्ध कवि है यह जागरूकता उनकी कविता के दृश्य को व्यापक और मानवीय बनाती है।[26] उस समय जनतंत्र का आभास नारों के द्वारा ही मिलता था। धूमिल जो कुछ कहना चाहते थे उसके लिए उनकी भाष बड़ी सार्थक रही है। उन्होंने सर्वाधिक वक्तव्यों की रचना की है, जो सन्दर्भ सापेक्ष हैं। इन्होंने समकालीन सदर्भो को सुन्दर और नये मुहावरे दिये है। 'कविता पेट से सुनी जा रही है', अकेला आदमी कटघरा होता है, 'कविता भाषा में आदमी होने की तमीज है, 'कुसियाँ वही है सिर्फ टोटियाँ बदल गई हैं। यह मुहावरे अपने अन्द एक इतिहास समेटे हैं जो तत्कालीन राजनीतिक परिदृश्य प्रस्तुत करते हैं। धूमिल ने कविता को 'हलफनामें' की संज्ञा दी है जिसमें अन्तनिहित सपाटबयानी है। यह सपाट बयानी धूमिल के काव्य में प्रभावशाली बन पड़ी है।

अब कोई दवा के अभाव में
घुट घुटकर नहीं मरेगा
अब कोई किसी की रोटी नहीं छीनेगा
कोई किसी को नंगा नहीं करेगा
अब यह जमीन अपनी है
आसमान अपना है।[27]

धूमिल का शब्द संसार व्यापक है। उनकी भाषा में अंग्रेजी, व उर्दू फारीस के अनेकों ऐसे शब्द है जिनके द्वारा तत्कालीन युगबोध को समझने में आसानी होती है। इनकी कविताओं में स्वतन्त्रता, चुनाव, प्रजातंत्र, लोकतंत्र, मंत्री, संसद, नेहरू, गाँधी, पंचवर्षीय योजना, मतदान, क्रान्ति, जे.पी. दाया हाथ, बायां हाथ, आदि अनेकों शब्दों साठोत्तरी पीढ़ी में यद्यपि धूमिल ने कम लिखा है (अल्प आयु के कारण) तथापि उनका स्थान इस पीढ़ी के कवियों में महत्वपूर्ण है।

व्याख्याता
विभाग हिन्दी
स्व. राजेश पायलट राजकीय महाविद्यालय
बाँदीकुई (दौसा)

सन्दर्भ

1. कल सुनना मुझे, पृ. 68
2. वही, पृ. 17
3. संसद से सड़क तक, पृ. 116
4. कल सुनना मुझे, पृ. 16

5. वही, पृ. 17
6. संसद से सड़क तक, पृ. 69
7. वही, पृ. 70
8. कल सुनना मुझे, पृ. 52
9. संसद से सड़क तक, पृ. 178
10. वही, पृ. 86
11. वही, पृ. 11
12. वही, पृ. 108
13. वही, पृ. 140
14. वही, पृ. 131
15. कल सुनना मुझे, पृ. 76
16. संसद से सड़क तक, पृ. 114
17. कल सुनना मुझे, पृ. 29
18. संसद से सड़क तक, पृ. 137
19. कल सुनना मुझे, पृ. 76
20. संसद से सड़क तक, पृ. 12
21. कल सुनना मुझे, पृ. 50
22. डॉ. नामवर सिंह, आजकल (गंवई अनुभव व किसानी संस्कार का कविः धूमिल), पृ. 7
23. संसद से सड़क तक, पृ. 20
24. कल सुनना मुझे, पृ. 17
25. संसद से सड़क तक, पृ. 161
26. अशोक वाजपेयी, फिलहाल, पृ. 34
27. संसद से सड़क तक, पृ. 110